हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277 - 9264

यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका

संकल्य

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

अप्रैल - जून, 2024

52 वर्षों से निरंतर
दक्षिण से प्रकाशित

सिक्किम राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी को अंगवस्त्र से सम्मानित करने के उपरांत यूजीसी केयर में सम्मिलित पत्रिका 'संकल्प' त्रैमासिक की प्रतियां भेंट करते हुए पत्रिका के संपादक डॉ. गोरख नाथ तिवारी।

'संकल्प' पत्रिका का अवलोकन करते हुए सिक्किम राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी । चित्र में डॉ. श्याम नारायण जी, ओ.एस.डी., राज्यपाल, सिक्किम, ए.डी.सी. मेजर संदीप मिश्र जी तथा संकल्प पत्रिका के संपादक डॉ. गोरख नाथ तिवारी।

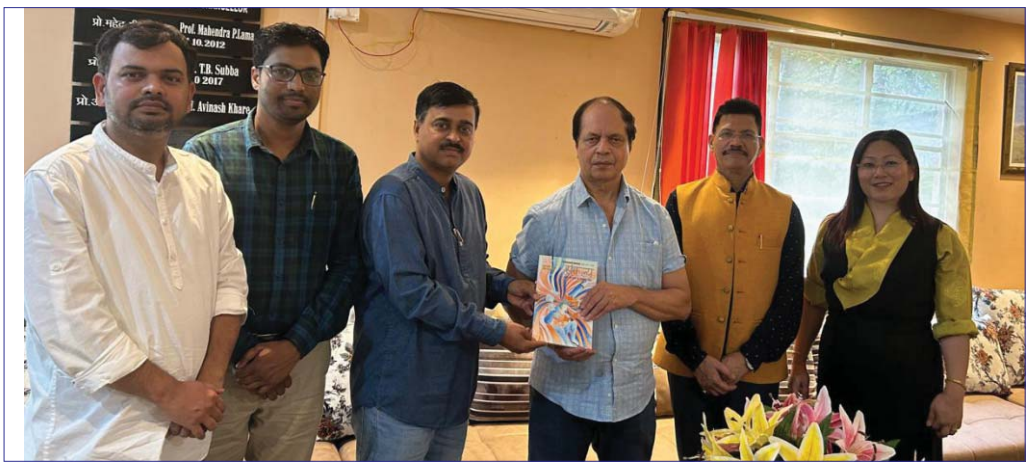

सिक्किम विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. अविनाश खरे जी को 'संकल्प' की प्रति भेंट करते हुए डॉ. गोरख नाथ तिवारी। साथ में हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. प्रदीप के. शर्मा, डॉ. चुकी भूटिया, डॉ. दिनेश साहू एवं डॉ. प्रदीप त्रिपाठी।

ISSN : 2277-9264

यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी एवं प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी कीर्ति स्तंभ

स्थापना वर्ष : 1956

संकल्य

त्रैमासिक

वर्ष : 52 : अंक–2, अप्रैल–जून, 2024

प्रधान संपादक
प्रो. आर. एस. सर्राजु

प्रेरणास्रोत
विवेकी राय एवं
प्रो. टी. मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
सुश्री कविता ठाकुर

संपादक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

परामर्शदाता मंडल

प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. नंद किशोर पांडेय
प्रो. शुभदा वांजपे
प्रो. जयंत कर शर्मा
प्रो. प्रभाकर त्रिपाठी
श्री ओम धीरज
श्री रूद्रनाथ मिश्र

प्रबंध संपादक
रेखा तिवारी

प्रूफ रीडर
प्रमोद कुमार मणि त्रिपाठी

सम्मानीय संरक्षक

श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा (विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री)

प्रकाशक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संपादकीय कार्यालय
प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद– 500 035 (तेलंगाना)

संकल्य (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्य'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।
- **हिंदी अकादमी** तथा हिंदी सेवा के लिए समर्पित **'संकल्य'** त्रैमासिक के सभी पद अवैतनिक हैं।

शुल्क भेजने का पता :
मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी** के नाम

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ संख्या 56 एवं 132 पर बैंक डिटेल देखें।

सचिव : डॉ. गोरख नाथ तिवारी
मकान नं. 22–7/72/ए, जय भवानी नगर,
रालागुडा सिद्धील गुट्टा कमान शमशाबाद, के.वी. रंगारेड्डी,
हैदराबाद– 501218 (तेलंगाना), ई–मेल : **hindiakadami@gmail.com**
फोन : 9032117105

मूल्य :
एक अंक का मूल्य रु. 125/–
वार्षिक : रु.500/–, **आजीवन सदस्यता :** रु.6,000/– (व्यक्तिगत),
संस्थागत आजीवन : रु.7,500/–, संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** सदस्यता : रु. 800/–,
संरक्षक सदस्यता शुल्क : रु.7,500/–

आवरण चित्र
- **श्री विश्वास तिवारी** (चित्रकार)
  सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल)

मुद्रक :
कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40–ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद–500 044
फोन : 040–27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु Kruti Dev 010 या Unicode Mangal फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई–मेल : hindiakadami@gmail.com पर भेजें।

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 52 : अंक–2, अप्रैल–जून, 2024

अनुक्रम Contents

संपादकीय

हिंदी साहित्य और भारत बोध : प्रो. आर. एस. सर्राजु 06

आलेख

1. संत साहित्य में गुरु जांभेश्वर जी एवं श्रीमंत शंकर देव की प्रासंगिकता : प्रो. दिनेश कुमार चौबे 07
2. खासी लोक साहित्य के विविध आयाम : प्रो. सुशील कुमार शर्मा 16
3. विश्व व्यापार और हिंदी : प्रो. वर्षा सहदेव 20
4. संत साहित्य के आधुनिक मनीषी : आचार्य नंद किशोर पांडेय : प्रो. अम्बिका ढाका 26
5. मुस्लिमेतर लेखकों की हिंदी कहानियों में चित्रित मुस्लिम समाज (2000–2023) : प्रो. पठान रहीम खान 31
6. जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना : डॉ. वंदना 39
7. मार्कण्डेय की कहानियों में नारी चेतना : डॉ. लेखा पी. 47
8. राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती के साहित्य में भारतीयता : डॉ. शशिप्रभा जैन 50
9. श्रीरामचरितमानस के साथ विस्तार में शाप की भूमिका : डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र 57
10. ढलती साँझ का सूरज : किसान अस्मिता और अस्तित्व को बचाने की संघर्ष गाथा : डॉ. रीना सिंह 63
11. हिंदी गज़ल परंपरा और लोकमन का यथार्थ : डालेश शर्मा, डॉ. शशिकांत मिश्र 68
12. नारी जीवन की कारुणिक कथा 'निर्मला' : डॉ.खुदुस ए.पाटील 75
13. साठोत्तरी हिंदी कविता में शिक्षित बेरोजगारों की व्यथा : अखिल चन्द्र कलिता 78
14. उत्तर भारत में घरेलू पर्यटन उद्योग के प्रचार और प्रसार में हिंदी भाषा की भूमिका : डॉ. अखिलेश सिंह, डॉ. अमित कुमार सिंह 83
15. लोक साहित्य परंपरा : एक अवलोकन : डॉ. राजेन सिंह चौहान 91
16. बुनकरों की जीवन दास्तान : झीनी झीनी बीनी चदरिया : डॉ. मेहराजबेगम सैय्यद 96

17. निराला का काव्य : समग्र अनुभव का रूपायन : डॉ. मनीषा मिश्र 101
18. मणिपुरी कहानियों में स्त्री : डॉ. लोङ्जम रोमी देवी 108
19. चरण सिंह पथिक की कहानियों में चित्रित लोक जीवन : बर्णाली खाउण्ड प्रो. सुशील कुमार शर्मा 114
20. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास–साहित्य का मूल्यांकन : मेरी आर. ललरिनमुआनपुई प्रो. सुशील कुमार शर्मा 119
21. हिंदी यात्रा वृत्तांत और पूर्वोत्तर समाज : अश्वनी कुमार गुप्ता प्रो. स्मिता चतुर्वेदी 125
22. अग्निशेखर की रचनाओं में विस्थापन जनित मानवीय वेदना : गीता शास्त्री डॉ. एस. प्रीति 133
23. 'महाभोज' उपन्यास और सामाजिक समस्याएँ : गीता रानी (शोधार्थी) डॉ. अनिशा 138
24. सिनेमाई दायरे में अस्मिता की तलाश : थर्ड जेंडर के संदर्भ में : अभिरामी सी. जे. डॉ. शोभना कोक्कडन 144
25. 'वह लड़की' उपन्यास में चित्रित दलित नारी का अंतर्द्वंद्व : डॉ. उषा 149
26. स्वयं प्रकाश की कहानियों में युगीन यथार्थ का विश्लेषणात्मक अध्ययन : मोनी (शोधार्थी) 152
27. आचार्य मम्मट के गुण निरूपा का अध्ययन : विशाखा बाजपेयी डॉ. रेनू शुक्ला 156
28. हिंदी के 'अलग–अलग वैतरणी' और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में अभिव्यक्त ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था : टिंकू छेत्री 164
29. हिंदी साहित्य में महिला रचनाकारों की भूमिका : डॉ. आशा देवी 169
30. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आधुनिक कालीन इतिहास दृष्टि : माया (शोधार्थी) 176
31. बिष्णु प्रसाद राभा की रचनाओं में स्वतंत्रता की चेतना : डॉ. दिनेश साहू 181
32. दलित आलोचक डॉ. धर्मवीर की आलोचना–दृष्टि : लक्ष्मण 186
33. बिया और बियानाम : असमिया समाज की सांस्कृतिक यथार्थ : मनसा नेउग 191

34. व्यवस्थित जीवन शैली का आधार पुरुषार्थ चतुष्टय : चंद्रकांत (शोधार्थी) डॉ. बिशम्बर रंजन 196
35. दलित व्यथा को व्यक्त करती 'घुसपैठिए' संग्रह की कहानियाँ : अपर्णा भारती 203
36. निर्मल वर्मा के कथा संसार में ईमानदारी और सच्चाई : प्रो. भारत भूषण डॉ. शशिकांत मिश्र 208
37. अंधेर नगरी : विवेक हीनता और निरंकुश शासन व्यवस्था को खुली चुनौती : डॉ. गोरख नाथ तिवारी 217
38. उदय प्रकाश की कविताएं और यथार्थबोध : डॉ. वाइखोम चींखैङानबा 223
39. संस्कृति में लोक पर्व : ईश्वरी ए. 228
40. हिंदी साहित्य में नाटक का योगदान : डॉ. पूनम देवी 234

संपादकीय

हिंदी साहित्य और भारत बोध

प्रो. आर. एस. सर्राजु

आजादी के 75 वर्षों के बाद हम नये सिरे से पिछले कुछ वर्षों से आत्मनिर्भर भारत और स्वयं समृद्ध भारत के बारे में सोच रहे हैं। इस क्रम में भारतीय साहित्य की परिकल्पना फिर से प्रासंगिक हो जाएगी। इधर भारतीय विश्वविद्यालयों में भारतीय साहित्य का अध्ययन और अध्यापन लगातार होता आ रहा है। वास्तव में हम भारत की अलग–अलग भाषाओं के साहित्य के बारे में सोचते थे, जैसे संस्कृत साहित्य, हिंदी साहित्य, तेलुगु साहित्य आदि, लेकिन जब यूरोप के देशों में इंडोलॉजिकल स्टडीज की परंपरा का विकास हुआ तब से भारतीय साहित्य की संकल्पना का व्यापक प्रचार होने लगा तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं और साहित्यों के विकास की प्रक्रिया का अध्ययन होने लगा। साथ ही आधुनिक भारतीय भाषाओं पर पूर्ववर्ती संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश परंपराओं के प्रभावों की चर्चा होने लगी। इधर अरबी, फारसी के साथ अंग्रेजी और यूरोपीय भाषाओं के साथ विश्व की भाषाओं के साहित्य के प्रभावों का अध्ययन भी होने लगा।

भारतीय समाज की भाषिक क्रांतियों और सामाजिक गतिशीलता ने हिंदी भाषा और साहित्य को भी प्रभावित किया था। एक हजार वर्षों के क्रम में हिंदी साहित्य की सृजनशीलता भी कई प्रभावों के अधीन विकसित हुई। निरंतर एक हजार वर्षों के परिवर्तनशील भारतीय समाज के साथ–साथ विदेशी ताकतों के दबाव के अधीन हिंदी भाषा और साहित्य की सृजनशीलता प्रभावित होती रही। पिछले तीन दशकों से भूमण्डलीकरण और तकनीकी अनुप्रेरित समाजों के विकास के आलोक में हिंदी साहित्य की सृजनधर्मिता नई दिशा में विकसित हो रही है, लेकिन ज्यादातर हिंदी साहित्य चिंतन की प्रक्रिया भूमण्डलीकरण के बौद्धिक चौखटों के अनुकूलन की प्रक्रिया पर ही आधारित बन गयी। यह एक तरह से बौद्धिक आयातीकरण है। कुछ भारतीय बुद्धिजीवी और साहित्यकार भारतीयेतर बौद्धिक चिंतन के उपभोक्ता बनते गये। दूसरे समाजों के अनुभवों को ग्रहण करना बुरी बात नहीं है, लेकिन भारतीय जीवन के आदर्शों के आलोक में स्वयं समृद्धि और आत्मनिर्भरता के प्रति भारतीय साहित्यकारों को मुख्य रूप से हिंदी साहित्यकारों को ध्यान देना आज की आवश्यकता है। हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक उपस्तरों में स्थान लेनेवाले संघर्षों की पृष्ठभूमि के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए। भारतीय साहित्य की संकल्पना हिंदी और भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों को प्रादेशिकता से ऊपर उठकर भारतीयता और भारत बोध की ओर ले जाती है, जो वर्तमान समय की आवश्यकता है।

प्रधान संपादक